तुलसी प्रज्ञा १९७९ ०२ (फोल्डर नं. ०२४५०५)

सम्पादक – डॉ. नथमल टाटिया

मुख्य टाइटल

सम्पादकीय ---------- ३१५

वचन – वीथी – आगम वचन ---------- ३१७

आचार्य प्रवचन – अनासक्ति – युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी ---------- ३१९

युवाचार्य का मनोनयत – एक ऐतिहासिक घोषणा ---------- ३२१

उत्तराधिकार पत्र ---------- ३२३

आचार्य प्रवर का शुभाशीर्वाद ---------- ३२४

नयी कसौटी – नया दायित्व – युवाचार्य महाप्रज्ञ ---------- ३२५

युवाचार्य श्री महापज्ञ – उल्लेखनीय तिथियां ---------- ३२८

मैं नये दायित्व के प्रति समर्पित रहूंगा – युवाचार्य महाप्रज्ञ ---------- ३२९

ईस पल का भी अभिनन्दन – महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ---------- ३३६

श्रमण – परिवार द्वारा समर्पित अभिनन्दन – पत्र ---------- ३३७

श्रमणी – परिवार द्वारा समर्पित अभिनन्दन – पत्र ---------- ३३८

मैं तो आपकी कृति हूं – युवाचार्य महाप्रज्ञ ---------- ३३९

दायित्व – निर्वाह के उदग्र आकांक्षी – युवाचार्य महाप्रज्ञ – महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा --- ३४०

आचार्य श्री तुलसी के उत्तराधिकारी – युवाचार्य का अभिनन्दन – प्रो. महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा भाई मालवणिया ---------- ३४९

युवाचार्य महाप्रज्ञ – एक गम्भीर चिन्तक – अगरचन्द नाहटा ---------- ३५१

समन्वयशील सन्त – युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ – जमनालाल जैन ---------- ३५३

अद्वैत भी, द्वैत भी, एकादश रुप भी – गोपीचन्द चोपडा ---------- ३५६

युवाचार्य की नियुक्ति – आचार्य का महान दायित्व – जबरमल भंडारी ---------- ३५९

मुनिश्री नथमल जी की बहुमुखी योग्यता का समुचित बहुमान – रतिलाल भाई ---------- ३६१

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ – आचार्यश्री तुलसी के दर्पण में – प्रस्तोता मुनि किशनलाल ---------- ३६४

युवाचार्य महाप्रज्ञ से एक भेंट – प्रस्तोता मुनि किशनलाल ---------- ३६८

युवाचार्य की नियुक्ति पर आचार्यश्री तुलसी के प्रति – मुनि नथमल (बागौर) ---------- ३७२

नाव से नाविक – मुनि नथमल (बागौर) ---------- ३७४

स्थितप्रज्ञ युवाचार्य – मुनि छत्रमल ---------- ३७६

वे सारे संघ के शीर्षस्थ व्यक्ति बन गए – मुनि बुद्धमल ---------- ३७७

अपूर्व कलाकृति – मुनि दुलहराज ---------- ३७९

नया दायित्व, नये दायरे – युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ – साध्वी कनकश्री ---------- ३८०

युवाचार्य की जय हो – मुनि रवीन्द्रकुमार ---------- ३८३

अध्यात्म के प्रेरणा – सोत – युवाचार्य महाप्रज्ञ – मुनि विमलकुमार ---------- ३८४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हे योगिराज – शत शत प्रणाम – लूनकरण विधार्थी ---------- ३८५
आज करे किसका अभिनन्दन – साध्वी मोहनकुमारी (श्री डूँगरगढ)---------- ३८६
एक उपलब्धि – साध्वीश्री आनन्दश्री ---------- ३८७
युवाचार्य महाप्रज्ञ की नियुक्ति – एक अभिनव ईतिहास – प्रसंग – सोहनराज कोठारी ---------- ३८८
संस्मरणो के प्रकाश में – उस समय के मुनि नथमल – आज के युवाचार्य – मुनिश्री बुद्धमल ---- ३९३
मर्यादा महोत्सव – विशिष्ट उपलब्धि – साध्वी संघमिता ---------- ३९९
मनीषी संत, साधक मन, वैज्ञानिक दार्शनिक और प्राज्ञ – डा. नरेन्द्र भानावत ---------- ४०१
महाप्रज्ञ से धर्म अनुशास्ता – एक गौरवपूर्ण उपलब्धि – देवेन्द्रकुमार कर्णावट ---------- ४०३
युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ – पहले और बाद में – साध्वीश्री कमलश्री ---------- ४०५
युवाचार्य श्री का अभिनन्दन – उपाध्यायश्री अमरमुनि---------- ४०७
शब्द व भाव के अमर शिल्पी, संस्कार – निष्पन्न मनीषी एवं प्रबुद्ध साधक युवाचार्य महाप्रज्ञ
– डॉ. छगनलाल शास्त्री ---------- ४०८
अभिनन्दन ! अभिनन्दन ! ---------- ४११
अभिनन्दन का प्रत्युत्तर – युवाचार्य महाप्रज्ञ ---------- ४२२
तेरापंथ को आचार्यश्री तुलसी की देन – साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ---------- ४२३
ईतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों से – मुनिश्री अनोपचन्द जी (नाथद्वारा) – मुनि नवरत्नमल ---------- ४३१
पाँच मुक्तक – मुनि मोहनलाल 'शार्दूल'---------- ४४१
श्री मज्जयाचार्य रचित 'जीणी चर्चा' – सम्पा . अनु. मुनि नवरत्नमल---------- ४४२
एक युवा श्रमणी – महाश्रमणी – साधअवी यशोधरा ---------- ४४६
आदर्श श्रावक – महावीर की कल्पना – मुनि किशनलाल---------- ४५०
नटकन्या और श्रेष्ठी पुत्र – सोहनराज कोठारी ---------- ४५२
शोध – लेख – गृहस्थ धर्म का आध्यात्मिक महत्व – प्रो. कैलाशचन्द जैन ---------- ४५६
चाय युग – डॉ. जेठमल भंमाली ---------- ४६१
एक सन्देश – युवा पीढी के नाम – कुं. मुकेश जैन ---------- ४६५
समाचार – दर्शन ---------- ४६८
जैन विश्व भारती – प्रवृत्ति एवं प्रगति ---------- ४९७
साहित्य समीक्षा ---------- ५००
प्रणाम महाप्रज्ञ – डा. नेमिचन्द जैन ---------- ५०३
Yuvacharya Sri Nathmalji Saint and Scientist – Prof. S. K. Ramchandra Rao---------- 103
Rare Combination of Jnana and Dhyana – Acharya-designate Shri Mahaprajna –
Ram Swaroop Soni ---------- 106
Hero as Saint – Miss Veena Jain ---------- 111
Anekant – Dr. Nathmal Tatia ---------- 113
The samkhya Theory of Perceptual Error and its Presentation by Prabhachandra –
Dr. Shiv Kumar ---------- 129

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org